अज्ञात यात्रा

उषा शर्मा

हैलो ये कहाँ लगा है ?

हैलो.... हैलो यह कहाँ लगा है ?

"हैलो कौन बोल रहा है?"

'ये कहाँ का नंबर होगा?'

'ये डाउहिल है। आपको किससे बात करनी है?'

'डाउहिल में मंजू बहन के घर में किया है.....!'

'तब तो गलत नम्बर लगा है। ये तो मंजू का घर नहीं है।'

इतना कहकर सविता ने फोन रख दिया और अपने काम में व्यस्त हो गई।

'दूसरे दिन फिर उसी समय दिन के लगभग दो बजे फोन की घंटी बजती है।

सविता ने फोन उठाया- तो वही आवाज आती है। मंजू से बात हो जाएगी?

'अरे! क्यों बार-बार यहाँ फोन कर रहे हो?' नम्बर थोड़ा जाँच लिया करो?'

सविता के बोलने के साथ ही उधर से जल्दी-जल्दी आवाज आयी–"देखिए न! मेरी दीदी ने यही नंबर दिया था....! सॉरी... पर जो भी हो आपकी आवाज सुनने से भीतर से खुशी मिलती है।

कल का दिन भी प्रसन्नता से बीता था। आज भी ऐसा ही हो।

मेरी खुशी के लिए कल भी फोन पर कुछ पल बोलने की अनुमति दोगी?"

युवा अवस्था में प्रवेश कर चुकी सविता को किसी अनजान व्यक्ति, वह भी पुरूष द्वारा इस प्रकार की बातें सुनना। उससे असीम आनन्द की प्राप्ति होना, स्वाभाविक ही था।

अपने हम उम्र की बातें करने पर अठारह साल की उम्र होने तक किसी के द्वारा आज तक प्रेम प्रस्ताव न पाने वाली सविता को किसी अंजान व्यक्ति से फोन पर हुई अपनी प्रशंसा से गुदगुदी का एहसास हुआ। परन्तु हल्की तरह से चिढ़ाकर 'मंजू का सही नंबर पता करके उसी को ही फोन करना' इतना कहकर फोन का

रिसीवर रख देती है। बिना पता चले ही दिनोंदिन दोपहर दो बजे सविता को उस फोन की प्रतीक्षा करने का क्रम चलता रहा। अब 'लैंडलाइन' पर नहीं। मोबाइल पर फोन आने लगा।

'आपकी आवाज ही इतनी मीठी है कि दु:खी मन को शांति का अनुभव हो जाए। उस पर साक्षात दर्शन हो तो सभी पाप धुल जायें। जीवन सार्थक हो जाने जैसा आभास हो"। इस प्रकार के प्रशंसापूर्ण वाक्य के मायाजाल में फँसती जा रही सविता भी इस तरह का प्रत्युत्तर देने में पीछे नहीं रहती थी "हाँ तो... आपकी प्रिय मंजू के चलते....

बातचीत का प्रसंग धीरे-धीरे प्रेममय बातों में परिणत हो रहा था। एक दूसरे की यादों में रातें कटने लगी। मिलकर सुख-दु:ख की बातें साझा करने तथा भावी जीवन की योजना तैयार करने वाली बातें करते हुए फोन पर बातचीत की अवधि भी बढ़ गई थी।

बहुत दिनों तक इसी तरह बातचीत का क्रम चलता रहा। अब मन की भावनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए सलाह-मशवरा करना तय हुआ।

'कहाँ मिलें?' मिलने की जगह भी डाउहिल और भिक्टोरिया (विक्टोरिया) बीच के एकांत स्थल पर तय हुआ।

खर्साङ बाजार से लगभग चार किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित उस जगह में सूर्य दर्शन नहीं होता है। बादलों की लुकाछिपी में कभी-कभी सूर्य निकलने की भी चेष्टा करता तो उस पर बड़े-बड़े देवदार (धुप्पी) के पेड़ बाधक बन जाते।

वन्य क्षेत्र होने के कारण वहाँ घरों की संख्या बहुत कम थी। कुछ ही लोगों का आना-जाना रहता था। कोमल और खिलते हृदय के प्रेमगीत गाने की चाह रखने वालों के लिए यह स्थान उपयुक्त था। सर्द मौसम की तरह सविता के प्रेम मिलन के गरम स्पन्दन धीरे-धीरे बढ़ने लगे।

वह नहा-धोकर साफ सुथरी होकर रुचिकर कपड़े छाँटकर पहनने लगी। हरे रंग का कुर्ता पायजामा और लाल रंग के स्वेटर को आज उसने अपने ऊपर फबता हुआ महसूस किया। घर का काम पहले ही निपटा चुकी सविता अपनी माँ को साथी से मिलने की बात कहकर धीरे से घर से निकलकर ऊपरी रास्ते पर चलने लगी। लंबे केश राशि को खुला रखकर आकर्षक सैंडिल और सुंदर कपड़े पहने रास्ते में बहुत परिचित लोग मिले जो उससे पूछताछ करते रहे। 'डाउहिल स्कूल तक जाना है, एक जरूरी काम है..' ऐसा उत्तर देती ऊपरी रास्ते पर चढ़ने लगी। गंतव्य स्थल पर पहुँचने से पूर्व वह असहज होने लगी। अपने इस व्यवहार से वह खुद ही आश्चर्य चकित हो रही थी। 'कभी इस तरह किसी अपरिचित व्यक्ति से मिलना नहीं हुआ। क्या ऐसे व्यक्ति से मेरा मिलना उचित होगा?' नहीं....एक बार मिलने मात्र से क्या होगा?' जान-पहचान ही तो बढ़ेगी।'

इस तरह के अंतर्द्वंद्व से उलझती वह निश्चित स्थल पर पहुँच गई। अजय उससे पहले ही वहाँ घड़ी देखते हुए पहुँच गया था.., उसके आने के इंतजार में था। लंबा, गठीला, आकर्षक शरीर और हँसमुख चेहरा देखकर प्रथम मिलन में ही फोन संगी अजय उसे बहुत भाया। उसके बोलने का तरीका और बीच-बीच में हँसी ठिटोली कर गंभीर वातावण को सहज बनाने की कला से वह मंत्रमुग्ध हो गई।

बातों का सिलसिला बहुत देर तक चलने के बाद, कभी-कभी हफ्ते में एक बार इसी स्थान पर भेंट करने की बात कहकर दोनों अब अपने रास्ते लौटने को मुड़े। 'साथ नहीं चलेगें..., फिर तुम्हें गाँव के लोग शंका की दृष्टि से देखेगें'..... अजय के इस सुझाव व दूर से आते लोगों को देख जल्दी-जल्दी छिपना, उसके इस व्यवहार से सविता अजय के प्रति और प्रभावित हो उठती है। वह मन ही मन सोचने लगी..... 'पहली मुलाकात में ही मेरी बदनामी का डर रखने वाला अजय, जीवन साथी बन जाने पर और भी ज्यादा प्रेम और इज्जत करेगा'।

मन में खटास लिए वहाँ अजय से बिछड़ने के बाद वह जल्दी में घर पहुँची। घर में उनके गाँव की माया दीदी आयी हुई थी।

सविता के घर पहुँचने पर उनकी माँ ने उसे माया दीदी से बातचीत जारी रखने की बात कह स्वयं नाश्ता बनाने के लिए रसोई घर चली गई। इस बीच सविता और माया दीदी के बीच ढेर सारी बातें होती रही। साथियों की बातें, गाँव घर की खबर पूछने जैसी औपचारिकता पूरी होने के बाद माया दीदी ने चिढ़ाकर मजाक बनाते हुए कहा- "आज तो सविता बहन रोज से कहीं भिन्न दिख रही हो, आज ज्यादा सुंदर और चेहरे पे दमक देख रही हूँ। क्या कोई खुशी की खबर है? चेहरे पर चमक, हृदय की प्रफुल्लता तो नहीं?"

ऐसे प्रश्न से सविता आश्चर्य से झनझनाती हुई उत्तर देती है- नहीं दीदी! अब बारहवीं कक्षा का परिणाम आने को है। परिणाम आने पर मैं कॉलेज जा पाऊँगी। यह सोचकर हर्षित हूँ। घर में रहते काफी बोर जो हो गई हूँ....।

"परीक्षा परिणाम आने के समय तो सभी डरे हुए होते हैं। बहन के चेहरे पर तो मैं दूसरी तरह की खुशी देख रही हूँ। मुझ दीदी को तो बता ही सकती हो। आवश्यकता पड़ने पर सुझाव भी दे सकती हूँ।"

कभी-कभार घर में आती माया दीदी को अपने मन की खुशी कब किस पर उतारूँ...ऐसी स्थिति में सविता ने कैमरे की रील की तरह फरर... सब बातें खोल दी। एक मन से वह दीदी के प्रति अविश्वास की भावना से भर गई। उसे डर लगने लगा कि कहीं माया दीदी सभी को न बता दें। दूसरी तरफ वह सोचने लगी थी- जो भी हो हृदय की उथल-पुथल तो शांत हुई।

'ओ...! अजय भाई! नीचे डुमाराम बस्ती के हर्के भाई का भतीजा है क्या? पहचानती हूँ। कुछ दिन पहले जब मैं वहाँ गई थी उस समय मिली थी। सचमुच! अच्छा लड़का है। मुझे तो बहुत पसंद है।

माया दीदी के इतना बताने के बाद सविता ने उनसे अजय से संबंधित प्रश्न रखे। घर कहाँ है? क्या काम करता है? कितना पढ़ा है? नौकरी करता है कि नहीं? माँ-बाप, भइया, दीदी क्या करते हैं? आदि-आदि।

स्नातक उत्तीर्ण अजय अभी बैंक में नौकरी कर रहा है, परिवार में एकमात्र बेटा, बाबा सरकारी नौकरी में, माँ भी प्राथमिक पाठशाला की शिक्षिका के रूप में अभी सेवारत है, इत्यादि बातें पता चलते ही वह मन ही मन गदगद हो उठी। अजय का परिवार भी उसे बहुत भाया।

"बारहवीं पास करके कॉलेज से स्नातक की डिग्री हासिल करने के बाद विवाह करने को मिले तो बहुत अच्छा हो"...फिर वह यह सोचने पर बाध्य हो गई कि "इस संबंध के लिए तो? माँ-बाप का राजी होना भी जरूरी है, घर का एक मात्र बेटा है.... वो भी सरकारी सेवा में कार्यरत। उसके ऊपर माँ-बाप भी शिक्षित।" अपने सुखी भविष्य की कल्पना मात्र से ही वह साँतवे आसमान पर पहुंच गई।

उसके पश्चात् अन्य गप्प-गपाष्टक करने के बाद चाय-नाश्ता करके माया दीदी लौट गई।

अगले दिन से अजय से बातचीत करने, उससे मिलने के लिए सविता और अधिक आतुर होने लगी। फोन तो वह रोज करने लगी पर मुलाकात सप्ताह में मात्र एक दिन हो पाने की बाध्यता अजय द्वारा दर्शाये जाने पर एक सप्ताह बिताना सविता को एक वर्ष जैसा लगने लगा। मानो समय रूपी पक्षी फुर्र.... उड़कर सुस्त गति में चला गया हो।

इस बीच माया दीदी का सविता के घर आने का अंतराल भी छूटने लगा (कम हो गया)।

सविता को न जाने क्यों माया दीदी के आने पर अजय का आना जैसा लगने लगा था क्योंकि मात्र उनसे ही वह अजय के बारे में पूछताछ कर सकती थी।

प्रत्येक रविवार को अजय उससे मिलने तो आता है पर निराश चेहरा लेकर। रोज चेहरे पर चमक लेकर चलने वाले अजय के चेहरे को काले बादल समान उदास देखकर उससे पूछा- 'आज आपको क्या हुआ? क्यों आप इतने दुःखी दिख रहे हैं?'

'कुछ भी नहीं हुआ–दो-तीन दिन से नींद नहीं ली, शायद इसी से ऐसा हुआ होगा'।

अजय का संक्षिप्त प्रत्युत्तर पाकर अधिकार जमाती हुई सविता कहती है-'क्यों क्या हुआ?' ऐसे तो नींद हराम नहीं होती? पक्का कुछ तो हुआ है। मुझसे नहीं कहोगे तो किससे कहोगे? हम दोनों मिलकर समाधान निकालेंगे।

सविता द्वारा जबरदस्ती करने के बाद अजय को बताना ही पड़ा। "सविता! हम दोनों इस समस्या को सुलझा नहीं पाएंगे। मैं घर का एक मात्र बेटा हूँ। इस तरह की बाध्यता मेरे सामने आ खड़ी है।"

'कैसी बाध्यता?'

"हिम्मत करके सुनना"। अजय ने अपनी उदासी का कारण बताना शुरू किया- मेरे बाबा ने मेरे जन्म के दस वर्ष पहुँचने पर उनके साथी (हरि अंकल) की बेटी मीरा के साथ मेरा विवाह कराने की प्रतीज्ञा ली हुई थी। हरि अंकल थोड़ा ज्योतिष में विश्वास रखने के कारण मीरा की कुंडली दिखवाये, अभी विवाह का योग नहीं है, आगे दस वर्ष तक लगन नहीं होने की बात ज्योतिष द्वारा बताया गया। ऐसा होने पर हरि अंकल और आंटी घर आकर पंद्रह दिन के भीतर विवाह कर्म संपन्न करने की बात कर रहे हैं। पहले ही वचन देने के कारण बाबा अंकल के प्रस्ताव को नहीं नकार पाए। माँ-बापू ने कल कहा-"मीरा बिटिया की कुंडली ही ऐसी है। विवाह करवा ही देते हैं। दोनों की आपस में जान पहचान है और फिर अजय के पास नौकरी तो है ही। वो पालन-पोषण भी कर ही लेगा।" देखो न..... उस दिन से मुझे अच्छी तरह से नींद ही नहीं आयी। एक तरफ तुम्हारे और मेरे बीच के गहरे प्रेम के बारे में सोचता हूँ तो दूसरी तरफ बाबा की प्रतीज्ञा। 'सविता! मैं तो तुम्हारे बिना जी नहीं पाऊँगा। बाबा का मन रखने के लिए यदि मीरा के साथ विवाह करता हूँ तो विवाह के बाद मैं अपना जीवन समाप्त कर दूँगा। विवाह के पहले भी ऐसा हो सकता है.....।

'चुप रहिए'

इतनी छोटी सी बात को लेकर जीवन समाप्त करने की बात करते हैं.....?'

"मैं लाचार हूँ ना... अभी तुम्हें भगाकर ले जाऊँ तो तुम्हारी और आगे पढ़ने की इच्छा को कैसे मार दूँ? फिर तुम्हारे माँ-बाप से बात कर तुम्हें इज्जत के साथ घर लाने की इच्छा है। मैं बड़ी दुविधा में पड़ गया हूँ। एक तरफ प्रेम की हत्या होगी और दूसरी तरफ आदेश का उल्लंघन....।

बहुत देर तक आँसू बहाकर एक दूसरे को समझाने की प्रक्रिया चलती रही उसके बाद इस बारे में दोनों ने माया दीदी से सलाह लेने का निश्चय किया। वहाँ से दोनों अपने-अपने रास्ते लौट गये। बातों का सिलसिला अभी खत्म भी नहीं हुआ था कि सविता के घर पहुँचने पर माया दीदी पहले से आकर माँ के साथ रसोई घर में जाकर खर्साङ बाजार में लगे 'मीना' मेला के बारे में जानकारी दे रही थी।

सविता को देखकर माया दीदी उसके कमरे में आकर बोली-'क्या हुआ आज! सीता-राम के बीच झगड़ा हुआ है क्या? मुझे तो तुम दोनों की जोड़ी सीता-राम की जोड़ी जैसी लगती है। प्रश्न अभी समाप्त भी न हुए थे कि माया दीदी उनके बीच आ गई। दुविधा की स्थिति के बारे में जानकारी देने के बाद दीदी ने फोन द्वारा अजय के माँ-बाप के साथ सभी बातों को स्पष्ट रूप में बताने की सलाह दी। साथ ही सच्ची बातें बताने पर माँ-बाप के राजी होने पर मंदिर में जाकर विवाह करने को कहा। दीदी के इस सुझाव से पल भर को सविता चकित रह जाती है। इस बीच में माया दीदी ने माँ-बाप के दबाव में पड़कर विवाह करने वाले जिन्दगी भर पश्चाताप करते हैं और जीवन में बहुत दुःख झेलते हुए लोगों का दृष्टांत देती है।

अभी ही अठारह वसन्त पार करने वाली, सुख में पली बढ़ी, जीवन के आरोह-अवरोह से अनभिज्ञ सविता को माया दीदी की बातें एक प्रकार से उपयुक्त लगने लगी। इस बारे में माँ-बाप के साथ चर्चा करके कल फोन में परिणाम बताने का परामर्श देकर माया दीदी अपने घर की ओर लौट गई। सविता रात भर बेचैन और छटपटाती रही। "अजय के माँ-बाप ने क्या कहा होगा, दोनों पक्ष के बीच तर्क हुआ होगा" अपने भविष्य को लेकर वह सोचने लगी कि उसका भविष्य किस ओर और कैसा मोड़ लेगा? इस तरह की बातें सोचते-सोचते सवेरा हो जाता है। दिनचर्या में व्यस्त रहते हुए ठीक बारह बजे माया दीदी आ पहुँचती हैं।

उससे दस मिनट के बाद सविता का मोबाइल बजता है। अजय ने सविता और माया दीदी को माँ-बाप का उत्तर नकारात्मक होने की जानकारी दी। विवाह के लिए अब एक सप्ताह मात्र समय रहने के कारण अंत में अजय और सविता भागकर विवाह करने की सलाह करते हैं।

अजय सविता को विवाह के बाद भी कॉलेज पढ़ाने, तीन-चार दिन के बाद डाउहिल लौटने, माँ-बाप के साथ मिलाने का आश्वासन देने के बाद सविता भी राजी हो जाती है। इस प्रकार वहाँ से चार दिन बाद गुरूवार को मुम्बई जाना तय हुआ।

बुधवार सवेरे उठकर सविता नहाती धोती है। अगले दिन घर से निकलकर तीन-चार दिन में लौटने का सलाह-मशवरा होने पर बैग लेते समय शंका उत्पन्न होने की बात ध्यान में रखकर एक बड़े से प्लास्टिक के थैली (झोला) में एक-दो जोड़ी कपड़े और आवश्यक सामान को डालती है। मन में एक प्रकार की खटास थी। माता-पिता से एक बार भी न पूछकर इतना बड़ा निर्णय लिया था उसने। दिन भर इधर-उधर काम करती रही पर आज काम काज में उसकी रूचि नहीं जग रही थी। टी.वी भी खोलकर उसने बंद कर दिया। माँ के साथ अपने परीक्षा परिणाम के बारे में काफी देर तक बातें करती रही। बगल के घर में जाकर साथियों के साथ भी बातें की परन्तु उस निर्णय के बारे में किसी से कुछ भी नहीं कहा।

किसी भी तरह दिन तो बीता, रात बिताना काफी मुश्किल रहा। सवेरे जल्दी उठकर माता-पिता को चाय दिया। घर की साफ सफाई की। लगभग आठ बजे ऊपर के घर जाने का बहाना लेकर अंतिम तैयारी करने के बारे में जानकारी लेने माया दीदी भी आ पहुँची। उनको देखने के बाद सविता ने अपने भीतरी मन में हुए घबराहट के बारे में अपनी भावना व्यक्त की।

'कुछ भी नहीं होगा बहन! अजय अच्छा लड़का है। इधर माँ-बाप को मैं सांत्वना देती रहूँगी। जल्दी ही तो लौटना है। मीरा के साथ अजय का विवाह रोकने के लिए मात्र ऐसा कदम उठाना पड़ रहा है। यह बात तो तुम्हें मालूम तो है।"

माया दीदी के इस तरह के आश्वासन से उसे बहुत हल्का अनुभव हुआ।

'बहन! बताना ही भूल गई। अजय ने आज सवेरे फोन किया था। उसको अचानक जरूरी काम से खर्साङ बाजार जाना पड़ गया। तुम्हें उसका दोस्त धीरज आकर ले जाएगा...। हवाई जहाज का टिकट कट जाने के कारण तुम लोग आगे जा सकते हो और काम खत्म करके ही दूसरी फ्लाइट से अजय भी आ जाएगा।

अभी माया दीदी ने अपनी बात खत्म भी नही की थी कि अजय का फोन आता है... "सविता! मुझे माफ़ कर देना। देखो न कार्यालय का आवश्यक काम पड़ जाने के कारण मुझे आने में एक दो घंटे विलंब हो जाएगा। तुम चिंता मत करो। धीरज के साथ चली जाना.. मैं पीछे आ जाऊँगा। वहाँ मैंने रहने के लिए घर का भी बंदोबस्त किया हुआ है।"

अजय ने धीरज से उसका परिचय एक दिन करवाया था इसलिए उसे उसके साथ जाने में कोई असहज अनुभव नहीं हुआ और वह जाने केलिए राजी हो गई। माँ को उसने यह कहकर कि उसके साथी ने बुलाया है और जल्दी ही आने की बात कहकर घर से चल पड़ी। खर्साङ बाजार के मोटर स्टैंड पहुँचने पर देखा कि धीरज पहले से ही पहुँचकर वाहन रिजर्व करके उसका इंतजार कर रहा था।

इस तरह रास्ते में खाने के लिए कुछ सामान खरीदकर वह वाहन के भीतर बैठ गई। वाहन धीरे से पंखाबारी के रास्ते होकर सिलीगुड़ी की तरफ चल पड़ा।

इधर माया दीदी वहाँ से जल्दी-जल्दी घर लौटकर अजय के साथ फोन में बात कर रही थी-'बधाई हो अजय! अब दूसरा नम्बर लिखो तो। ये लैंडलाइन का नहीं मोबाइल का नम्बर है-74041-420-11!!' परंतु इसमें मेरा हिसाब थोड़ा अधिक होना चाहिए। माल तगड़ा है ना...!'

अजय ने तुरंत उस नम्बर को डायल किया और कहने लगा-

'हैल्लो ss ये कहाँ का नंबर है?

'हैल्लो ये किसका नम्बर है...?

*(**लेखकीय परिचय:** उषा शर्मा सिक्किम की चर्चित कहानीकार हैं। वर्तमान में आकाशवाणी गंगटोक में समाचार उद्घोषिका (नेपाली) पद पर कार्यरत हैं।)*

***